VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध
ESSAY

*निर्धारित समय: **तीन** घंटे*
*Time Allowed: **Three** Hours*

टेस्ट कोड/ Test Code : 2488

*अधिकतम अंक: **250***
*Maximum Marks: **250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

SE

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

- -

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 0763948

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : SHASHANK CHAUHAN

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English

Hindi

तारीख
Date

25/08/2023

निबंध
ESSAY

केंद्र
Centre 34, PUSA ROAD
KAROL BAGH

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

VISIONIAS

	महत्वपूर्ण अनुदेश **उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।**	**Important Instructions** **Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISION IAS

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे	**टेस्ट कोड : 2488**	अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours	**Test Code : 2488**	Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISION IAS

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

VISION IAS

All the Best

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

खण्ड – A / SECTION – A

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।
It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।
A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।
Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।
History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

COVID-19 के समयकाल में जब आपदा की प्रथम वेग अपने चरम स्तर पर थी तो इटली जैसे देशो में जीवनबचाव संबधी उपकरणों की सीमित उपलब्धता से एक ऐसी स्थिति प्रकट हो गयी थी, जब वहाँ की सरकार को वृद्ध बनाम युवाओं और बच्चों की जिंदगी बचाने के लिए, युवाओं और बच्चों को प्राथमिकता देनी पड़ी थी।

उपर्युक्त उदाहरण का उद्देश्य यह बताने के

लिए किया गया है कि हर एक राष्ट्र अपने विकास को बनाए रखने के लिए अपनी मानव पूंजी अर्थात् बच्चों में निवेश करता है। क्योंकि वह इस बात से अवगत होता है कि ये बच्चें ही आगें चलकर राष्ट्र की दिशा तथा प्रगति को तय करेगें।

किंतु प्रश्न यह भी है कि क्या व्यस्कों की मरम्मत करने का कोई लाभ नहीं होता है, और अगर होता है तो उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है? अतः निबंध्य के 'मूल सत्य' को जानने के लिए हम 'सुकरात' की 'द्वंद्वात्मक प्रणाली' की सहायता ले सकते है जहाँ प्रश्नों के माध्यम से हम 'सत्य' अर्थात् निबंध्य के मूल सार को समझनें का प्रयास करेगें।

सर्वप्रथम प्रश्न यह होगा कि टूटे हुए व्यस्क की मरम्मत करना क्यो कठिन है? दूसरा, मजबूत बच्चों का निर्माण तुलनात्मक रूप से क्यों आसान है? क्या यह सार्वभौमिक सत्य है कि टूटे हुए व्यस्क की मरम्मत करना कठिन है? तथा अंत में यह जाननें का प्रयास करेगें कि आज के इस विश्व में मजबूत

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

बच्चों के निर्माण की क्यों प्रासंगिकता है?

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

अब हम यदि टूटे हुए 'व्यस्क की मरम्मत' की कठिनाइयों को देखें तो सर्वप्रथम पूर्वाग्रह, इच्छा-शक्ति, आत्मविश्वास और न जाने ऐसे कई मूल्य दिमाग में आते हैं जो व्यक्ति के पुनर्उत्थान में बाधक का कारण बनते हैं। अब जैसे हम स्वास्थ्य मंत्रालय के सर्वेक्षण का ही उदाहरण ले जहाँ यह बताया गया है कि भारत की 50 वर्ष से ऊपर की आबादी का आधा भाग 'मानसिक अवसाद' की छोटी-बड़ी समस्याओं से ग्रसित है।

उपर्युक्त उदाहरण यह दिखाता है कि इच्छा-शक्ति, सकारात्मक अभिवृत्ति के अभाव व्यक्ति की मरोम्मत को कठिन बना देते हैं और समाज के समक्ष यह प्रश्न उठते हैं कि सीमित संसाधनों का उपयोग किस दिशा में किया जाए टूटे हुए व्यस्कों की मरम्मत या सुदृढ़ मानव पूंजी निवेश जो मजबूत बच्चों का निर्माण कर सके।

अब यदि इस संदर्भ को ऐतिहासिक स्तर पर ही देख ले तो चाणक्य के टूटे हुए मन

ने खुद को शक्तिशाली बनाने के बजाए 'चंद्रगुप्त मौर्य' जैसे बालक पर अपनी संभावनाओं को देखा क्योंकि उन्हे पता था टूटे हुए व्यस्क की मरम्मत करने के बजाए मजबूत बच्चे का निर्माण करना आसान है, और इस बात का प्रमाण भारत में 'मौर्य वंश' की स्थापना से शुरू होता है जिसे 'चंद्रगुप्त' जैसे बालक को 'सम्राट' में परिवर्तित करने का कार्य चाणक्य द्वारा किया गया था।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इसी प्रकार मध्यकालीन भारत के घटनाक्रम को ही देख ले जब हुमायु की मृत्यु हुई थी तो अकबर सिर्फ 10 वर्ष का था, लेकिन अल्पआयु की वजह होने के बाद भी उसे गद्दी पर बैठाया गया जिसका तर्क उसकी माँ ने यह दिया था कि अल्पआयु होनें के कारण वह राज्य को सभी संभावनाओं से देखेगा, उसमे कोई पूर्वाग्रह नहीं होगा, वह असीम संभावनाओं को अपने में समेटेगा। जिसका परिणाम भी यही निकला कि दीन-इ-इलाही, धर्मनिरपेक्ष जैसे मूल्य संकीर्णता के उस युग में स्थापित हो सके।

आगे बढने पर हम यदि स्वतंत्रता आंदोलन की तरफ देखें तो 1915 के समय गांधी के आगमन से भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में एक नयी दिशा देखने को मिली। गांधी जी को पता था कि नरमदल कांग्रेस की मरम्मत करने के बजाय असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा सत्याग्रह जैसे उन नवजात सिद्धांतों को मजबूत करना था जो राष्ट्र को स्वाधीनता दिलाने में सहायक हो सके

इसी प्रकार आजादी के बाद भारत के समक्ष यह चुनौती थी कि वह अपने दर्शनवादी शिक्षा तथा रूढ़िवादी सिद्धांतो की मरम्मत करे या पश्चिमी तर्कवादी के अनुरूप नए संस्थानों का निर्माण करे तत्पश्चात इसस भारत में IIT's की स्थापना की गई जिसका परिणाम यह निकला कि आज विश्व की कई कंपनी के CEO's नए भारत की शिक्षा के उत्पाद है उदाहरण के रूप में Google, Microsoft, Adobe, Mastercard आदि को लिया जा सकता है।

अब अगर हम आज के वैश्विक माहौल को देखे तो जलवायु परिवर्तन एक अहम

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

समस्या उभरकर सामने आती है। वैश्विक परिदृश्य में सभी देशों चाहे वो विकसित देश हो या विकासशील इस द्वंद में है कि ऊर्जा की पारंपरिक प्रणालियों की मरम्मत करे या नए नवीकरणीय ऊर्जा की तरफ अपने ध्यान को आकर्षित करे। जिसके बाद निश्चित ही UNFCCC आदि वैश्विक मंचों पर पारंपरिक प्रणाली को चरणबद्ध तरीके से खत्म करके सौर, पवन, बायो, परमाणु ऊर्जा जैसे नवीकरणीय संभावनाओं पर बल दिया गया है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इसी प्रकार वैश्वीकरण के इस युग में जब विश्व विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहा है जैसे संरक्षणवाद, मानवाधिकार उल्लंघन, प्रवास, गरीबी, भुखमरी तो इस स्थिति में विश्व को दिशा देने में वैश्विक संस्थानों का क्या योगदान होना चाहिए? इस प्रश्न पर कई इसके 'मरम्मत' पर जोर देते है तो कई नव संगठनों के निर्माण के। इसीलिए BRICS, SAARC, ASEAN, AFRICAN UNION जैसे नए संगठन भावी पीढ़ी की कई संभावनाओं को अपने में समेटते है जो 'समानराष्ट्र समान

वोट' की नीति पर कार्य करेगें न कि भेदभावपूर्ण वीटो या वोटिंग के आधार पर, जैसा कि इन टूटे हुए संस्थानों में दिखाई पड़ता है।

अब यदि निबंध के दूसरे भाग पर चर्चा करे तो कि क्या टूटे हुए व्यस्क की मरम्मत मजबूत बच्चों के निर्माण की तुलना में कठिन है, तो सर्वप्रथम 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' का प्रश्न दिमाग में उठता है कि यदि हम नए उत्पादों को ही बनाएगें तो यह पृथ्वी कूड़े के ढेर में तब्दील हो जाएगा, जो पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। इसीलिए वर्तमान व्यवस्था 'नए' के निर्माण में नहीं 'टूटे की मरम्मत' से है उसी आधार पर अब देशों में 'Right to Repair' की मांग को बढ़ावा मिला है।

इसी प्रकार समाज में ऐसे कई उदाहरण मिलते है जिन्होनें खुद को 'मरम्मत' करने के बाद ही सफलता को प्राप्त किया है 'KFC' फूड चेन इस दिशा में सबसे महत्वपूर्ण

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidates must not write on this margin

हैं जिसके मालिक द्वारा 67 वर्ष तक लगातार संघर्ष के बाद सफलता को पाया गया।

अब हम खेलों की ही दुनिया को देख ले तो कई देश पुराने खिलाड़ियों की सहायता से अपने देशों में खेलों की संभावनाए को देख रहे है जैसे 'सऊदी प्रो लीग' जहाँ क्रिस्टियानों रोनाल्डो, करीम बेंजमा जैसे पुराने खिलाड़ी ही 'फुटबाल' के आधार को 'मध्य एशिया' में फैला रहे हैं।

इसी प्रकार यदि 'राजनीति' के क्षेत्र को देखें तो यहाँ हमेशा 'old is gold' को तरजीह दी जाती हैं क्योंकि यह विभिन्न अनुभवों के आधार पर राजनीति में स्थिरता प्रदान करते हैं, उदाहरण के तौर पर देखे तो लगभग अधिकांश देशों के राष्ट्रप्रमुख 50 वर्ष के ऊपर के हैं।

अब यदि हम तत्कालीन विश्व की स्थिति को देखे तो यहाँ जलवायु परिवर्तन, लैंगिक हिंसा, संरक्षणवाद, व्यक्तिवाद, मानव-पशु संघर्ष, संवेदना-हीन समाज — आदि कई समस्याओं का

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

सामना कर रहा है। ऐसी परिस्थिति में मजबूत बच्चे का निर्माण हो तर्क संगत प्रतीत होता है जहाँ बच्चों में मानववाद, बंधुत्व, संवेदना जैसे मूल्य स्थापित किये जा सकते है जो विश्व को एक परिवार की दृष्टि से देखें न कि वैयक्तिक स्वार्थ से।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इसी प्रकार हमें उन नई नीतियों को बनाने की आवश्यकता है जो सिर्फ पुराने की मरम्मत न प्रदर्शित करता हो जैसे Net zero commitment, महिला अधिकारों की समानता, 'हिंदू उत्तराधिकार कानून' में महिलाओं को संपत्ति का बराबर का अधिकार — इत्यादि

इसी प्रकार हमें उन नए संगठनों को भी बनाने की आवश्यकता है जो 'अंतरिक्ष संबंधी, साइबर स्पेस, डीप सी (SCA), आतंकवाद जैसी समस्याओं के लिए प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हों। न कि राष्ट्र के कानूनों में सिर्फ छोटे-मोटे संशोधनों के आधार पर।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

- अतः कहा जा सकता है मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है लेकिन हमें टूटे हुए व्यक्तों की मरम्मत पर भी जोर देना चाहिए क्योंकि आज की वैश्विक समस्याएं इन दोनों के समन्वय से हल होगीं न कि उनके प्रथकीकरण से।

अतः हमे अरस्तु के Golden mean तथा बुद्ध के मध्यम मार्ग के अनुरूप दोनों के सामंजस्य पर जोर देना चाहिए जो एक 'संधारणीय विश्व' की स्थापना कर सके। जहाँ पारिस्थितिकी के हर एक घटकों की रक्षा सके जहाँ संपूर्ण विश्व एक 'वसुधैव कुटुंबकम' की अवधारणा को प्रस्तुत करे।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।
The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।
The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।
Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।
Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी

"जो लोग दीपक को अपने पीछे रखते है, वे मार्ग में अपनी छाया को पाते हैं" —— रवीन्द्र नाथ टैगोर

उपर्युक्त कथन यह संदर्भित करता है कि हम अपने जीवन तथा समाज के लिये कितने सजग है, कि क्या हम अपने भीतर छुपी हुई बुराई को देखकर

उसे सही करने का प्रयास करते है? यहाँ सिर्फ उस बुराई के अंधेरें में ही रहना चाहते है। रवींद्र नाथ टैगोर जी का कथन यही संदर्भित करता है कि हमें आने वाली समस्याओं के प्रति सतर्क रहना चाहिए न कि उन्हे नजरअंदाज करना। इसके अतिरिक्त यह इस बात की ओर भी संकेत करता है कि हम खुलेमन से सारे विचारों को समझेगें या उसका निवारण करेंगें तो हम उन समस्याओं को टाल सकते है जो कार्य न करने पर प्रकट हो सकती थी।

इस कथन का प्रयोग निबंध के उस मूल सार को संदर्भित कर रहा है जहाँ यह बताया गया है कि यदि आप सजग या सतर्क है तो आपको समस्यारूपी छाया का सामना नहीं करना पड़ेगा

इसी प्रकार यदि हम 'चेहरे को रोशनी की ओर रखने के अर्थ को समझें तो यह हमारे खुले मन और दिमाग की स्थिति को प्रदर्शित करता है जो बिना किसी पूर्वाग्रह, नजरअंदाज आदि की स्थिति को दिखाता है जहाँ व्यक्ति गलत होने की स्थिति में उसे तात्कालिक रूप

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

से सही करने का प्रयास करता है। यदि हम बीते हुए समय काल में अपने चेहरें को रोशनी की तरफ न रखने के परिणामों को देखें तो इसके कई उदाहरण हमारी आज की जिंदगी को भी प्रभावित करते हैं।

अब यदि 10 वी सदी के 'विदेशी आक्रांताओं के भारत पर आक्रमण को देखे तो यह तत्कालीन राजाओं की उस सोंच को दिखाता है जिसे उन्होने रोशनी की बजाए अंधेरे में रखा था, फिर चाहे वो सामरिक दृष्टि से 'खैबर दर्रे' को खुला छोड़ना हो या 'आपसी फूट' की भावना हो, इन सभी ने भारतवासियों को उस छाया में रखा जहाँ लूटपाट, हत्या और पता नहीं कितने मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ होने को प्रदर्शित करता हो।

ऐसी ही एक घटना सन् 1600 ई. में 'ब्रिटिश चार्टर' से मुगलों द्वारा कंपनी खोलने की अनुमति देने की थी जिसे तत्कालीन शासकों द्वारा रोशनी के उस स्वरूप से नहीं देखा

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

गया जो आगे तो काल का कारण बनी और इसके साथ ही भारत भी 200 वर्षों तक अंधकार की काली छाया में रहा जहाँ शोषण, आर्थिक ह्रास, भुखमरी, गरीबी, हत्या जैसे परिणामों से नागरिकों को रुबरु होना पड़ा

इसी प्रकार भारतीय समाज में भी ऐसी कई धारणाए रही है जो रोशनी की तरफ चेहरे को हटाने की दृष्टि दिखाती है फिर चाहें वो सती प्रथा हो या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, अस्पृश्यता, आडंबरवाद, भेदभाव — आदि इन सभी ने समाज को अंधेरें की छाया में ही रखा है जिसका परिणाम यह निकला कि स्त्रियों को समान अधिकार नही है, समाज में जातिगत संघर्ष बरकरार है तथा धर्म के नाम पर बड़े दंगों का होना भी कोई विशिष्ट बात नहीं है। यह सारी विसंगति रोशनी की तरफ न देखने का ही परिणाम थी।

अब यदि आर्थिक आधार को ही ले लीजिए जहाँ समस्त विश्व औद्योगिक क्रांति पर बल दे रहा था तो वहीं भारत आडंबरवाद

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

के अंधेरे में खुद को फंसा रहा था जिसका परिणाम यह निकला पश्चिम में जहाँ उद्योग विकसित हुए तो वही भारत में गरीबी और भुखमरी के नए रूप। यह सब चेहरे को रोशनी की तरफ देखने या न देखने के परिणामों को ही व्यक्त कर रहा है।

इसी प्रकार राजनीतिक अधिकारों की बात करे तो लोकतंत्र में अधिकारों का उद्देश्य व्यक्ति के उत्थान को प्रकट करता है पर भारत ने अधिकारों के प्रति रोशनी देखने के बजाए ऐसी राजनीति प्रथा स्थापित की जो 'जाति' की व्यवस्था को मुख्य आधार देती है जहाँ नेताओं द्वारा वोट जाति के नाम पर मांगा जाता है लेकिन उनके प्रति दायित्वों को न निभाना समाज के काले अंधेरे की छाया को ही दिखाता है।

अब यदि 'स्वास्थ्य' के प्रति समाज के दृष्टिकोण को देखा जाए तो यह कहीं से भी 'रोशनी' की तरफ को प्रदर्शित नहीं करता। इसका एक उदाहरण उपन्यासकार में "फणीश्वर नाथ

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

रेणु' के 'मैला आँचल' के उपन्यास में दिखता है जहाँ स्त्रियों की जाति के ~~यह~~ संदर्भ में यह बात प्रचलित है कि उन्हें इलाज की जरूरत ही नहीं होती

" साहब, औरत की जात बिना दवा के ठीक हो जाती है"

चूँकि यह साहित्य का उदाहरण है लेकिन ~~इतिहास~~ की यह छाया आज तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है जहाँ अनीमिया की दर 55% से ज्यादा है, जहाँ मातृत्व मृत्यु दर 100 से अधिक है। ये परिणाम निश्चित ही स्वास्थ्य के प्रति हमारी सोच को प्रदर्शित करते हैं।

इसी प्रकार समाज के आंतरिक हिस्सों की बात करे तो यह संप्रदायवाद, क्षेत्रवाद, जैसी कई समस्याओं से जूझ रहा है। ये सारे कारण चेहरे को रोशनी की तरफ न देखने के ही परिणाम हैं जहाँ विकास का आधार क्षेत्रीय असमानताओं के आधार पर किया गया, जहाँ रोजगार, आधारभूत अवसंरचना आदि को छोड़कर

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

वोट बैंक राजनीति और समाज के सिर्फ कुछ तबको के साधने पर ही बल दिया गया।

ऐसी ही समस्याएँ आज के भारत की सीमा संबंधी मुद्दों में प्रकट होती है जहाँ तात्कालीन राजनीतिकों द्वारा चेहरा रोशनी में रखने के बजाए अंधेरे में रखा जिसके परिणामस्वरूप अक्साई चिन, पूर्वी-चीन सीमा तथा कश्मीर विवाद जैसी अंधेरी छाया प्रदर्शित होती है जहाँ हजारों सैनिकों की जान इन मुद्दों की वजह से ही गवानी पड़ी

हालांकि ये सारी समस्याए तब थी जब हमने चेहरे को रोशनी की तरफ नहीं रखा लेकिन हमें उन मुद्दों की तरफ ध्यान होगा जहाँ हमने चेहरे को रोशनी की तरफ देखते हुए कार्य किया।

ऐसे में सर्वप्रथम 'डिजिटल भुगतान' सबसे बड़ी उपलब्धि है जहाँ अत्यधिक विकसित देश अभी भी 'क्रेडिट कार्ड' जैसी

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

व्यवस्था का उपयोग करते हैं तो वहीं भारत का सब्जीवाला भी 'Q.R' कोड के माध्यम से भुगतान को प्राप्त करता है।

'रोशनी की तरफ चेहरे' का मुख्य स्वरूप भारत में 'RTI' के अधिनियम से परिलक्षित होता है जहाँ व्यक्ति को प्रकाश के उजाले में रखकर उसका विकास किया जाता है जिसका परिणाम यह निकलता है कि भ्रष्टाचार, रेड Tapism जैसी बुराइयों में कमी आती है।

इसी प्रकार 'मानव पूंजी' में निवेश भी 'चेहरे को रोशनी' की तरफ रखने का इशारा करता है जहाँ जनसांख्यिकी लाभांश मानवपूंजी में निवेश करके ही प्राप्त किया जा सकता है जब वैश्विक परिदृश्य 'AI, IOT, 3D प्रिंटिंग, मशीन लर्निंग की तरफ बढ़ रहा हो तो उस समय नई शिक्षा नीति, कुशल प्रशिक्षण की व्यवस्था भारतीय क्षमताबल को अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार प्रदान

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

करेगी।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इसी प्रकार आज जब समाज में 'लैंगिक समानता' के विचारों को प्रगति मिलती है तो यह 'रोशनी के तरफ चेहरे' की स्थिति को दिखाता है, जहाँ समाज में समानता सभी को समान अधिकार दिलाकर ही प्रदर्शित हो सकती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि चेहरों को रोशनी की तरफ रखने के उपाय क्या है? अगर उपायों को स्तर से देखे तो 'सकारात्मक सोच' के साथ 'संवेदना', आत्मविश्वास, प्रेम जैसे मूल्य व्यक्ति को 'सतर्क' रहने की मनोस्थिति से पूर्ण करते है जहाँ वह बिना किसी पूर्वाग्रह, भेदभाव के अपने लक्ष्यों को प्राप्त करता है।

उपायों का दूसरा स्तर शिक्षण

संस्थानों के माध्यम से हासिल किया जा सकता है जहाँ वह व्यक्ति के पूर्ण विकास पर बल देकर इसे इस प्रकार सामर्थ्य बनाता है कि वह 'अच्छे' और 'बुरे' में फर्क करना सीख जाता है।

अतः हम यह कह सकते हैं सही विचार तथा वातावरण तथा अपने उद्देश्यों के प्रति सजगता व्यक्ति को 'रोशनी के प्रकाश' में बनाए रखने में मदद करती है।

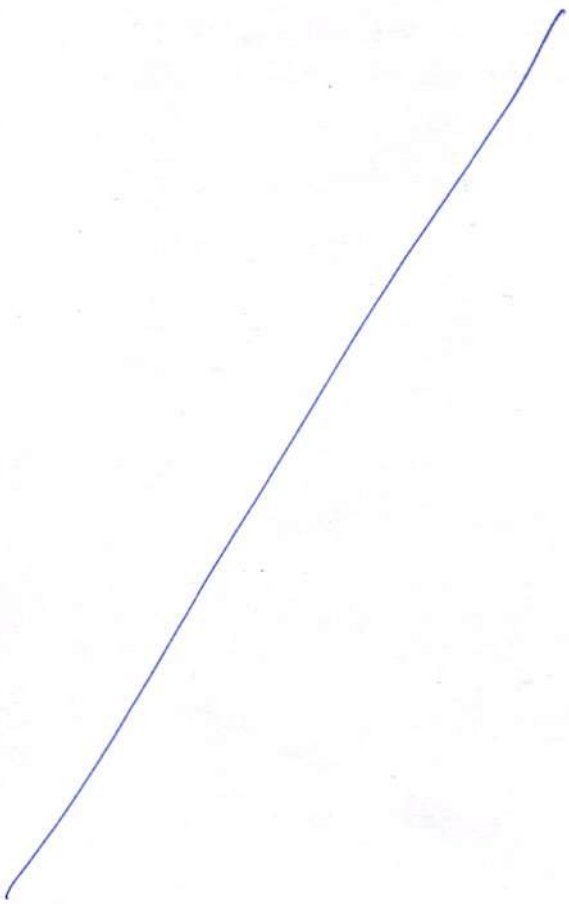

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

SPACE FOR ROUGH WORK

historical — 12 century, Britishers — conversion

social evil — sati Pratha, भ्रूण हत्या

economic

political — Caste / Reservation

Health

I.R

why?

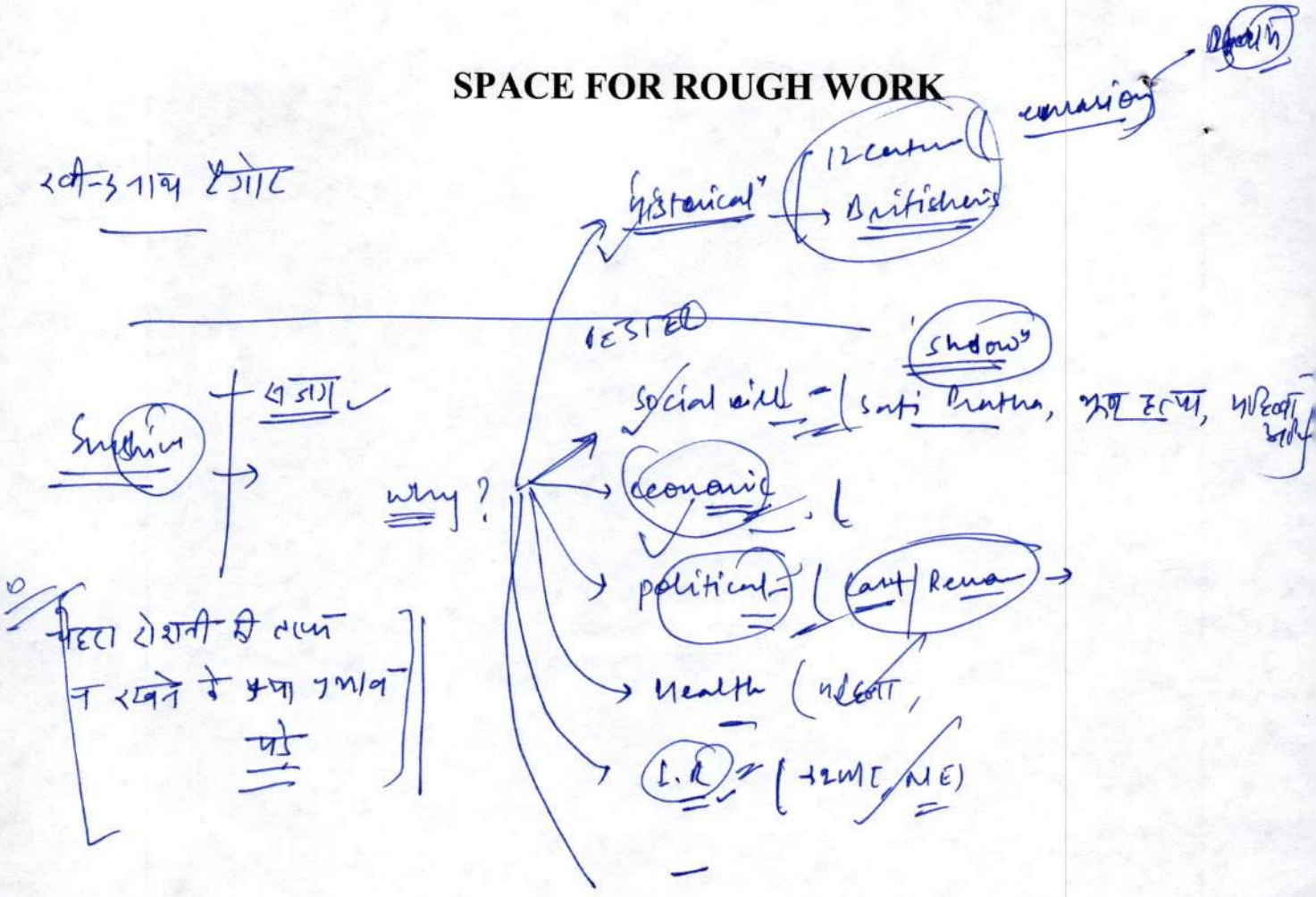

'Social'

↳ 21 century [equal Right, गरिमापूर्ण, समान]

↳ Impact

women

[RTI]

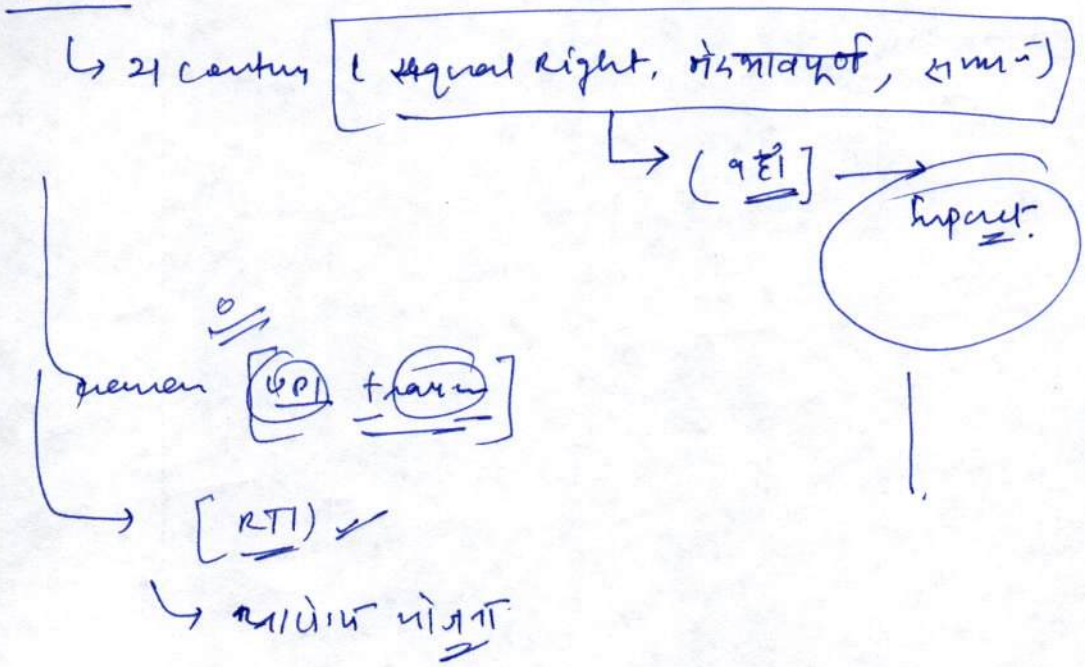

SPACE FOR ROUGH WORK

जरूरतमंद ~ अधिक उम्र के लोगों की तुलना में युवाओं को

'COVID-19' के समय इटली के अस्पतालों में जब स्थिति इस बात पर

आ पहुंची थी कि बड़े उम्र के लोगों को बचाया जाना या बच्चों

और युवाओं को → तो यहाँ की सरकार द्वारा बच्चों एवं युवाओं को बचाने का काम

↓

उपर्युक्त उदाहरण है का उद्देश्य इस बात का था कि राष्ट्र, संस्थाओं

लेकिन ऊपर दिये गये उदाहरण क्या सार्वभौमिक रूप होता है इस को

समझने के लिए इसे उदाहरण की है — (— रूप के स्रोतों का प्रयोग

नैतिक मानक

SPACE FOR ROUGH WORK